10

दकन (दक्षिण भारतीय चित्र शैली)

Deccan School

10.0 भूमिका

भारतीय चित्र कला के प्राचीनतम चित्र दक्षिण भारत की गुफाओं में ही प्राप्त हैं, जिन का प्रभाव भारतीय चित्र कला पर किसी न किसी रूप में आज तक विद्यमान है।

चौदहवीं शताब्दी में राजनीतिक उथल पुथल का लाभ उठाकर दक्षिण भारत के अनेक प्रान्तीय सामन्तों ने अपने आप को अलग राज्यों के रूप में खड़ा कर लिया जिन में विजय नगर तथा बेहमीनी राज्य प्रमुख थे जहां दकन शैली की चित्र कला का विकास हुआ। दक्षिण की सब शैलियां जैसे नागर शैली, विजय नगर शैली, बेहमीनी शैली, बीजापुर शैली तथा गोल कुन्डा शैली आदि समकालीन हैं, जिनमें तंजौर के कलाकारों की चित्र रचना शैली का अपना अलग ही स्थान है।

(मानचित्र में उस काल के दक्षिण भारत के राज्य तथा केन्द्रों का अवलोकन करें)

10.1 उद्देश्य

प्रस्तुत पाठ सामग्री का अध्ययन करने के बाद आप इस योग्य हो जाऐंगे कि –

- दक्षिण भारत की चित्र शैलियों के उद्गम तथा विकास की पृष्ठभूमि पर प्रकाश डाल सकेंगे;
- दक्षिण भारतीय शैली के लघु चित्रों का शीर्षक बता सकेंगे;
- दक्षिण भारतीय लघु चित्रों की तुलना अन्य लघु चित्रों से कर सकेंगे;
- दक्षिण भारतीय शैली के चित्रों की विशेषताओं का वर्णन कर सकेंगे;
- दक्षिण भारतीय शैली के चित्रों का रचना काल, शैली तथा विषय का वर्णन कर सकेंगे;
- दक्षिण भारतीय शैली के चित्रों के कलाकारों के नाम बता सकेंगें।

निजामुद्दीन औलिया और अमीर खुसरो

10.2 निजामुद्दीन औलिया और अमीर खुसरो

शीर्षक	–	*निजामुद्दीन औलिया और अमीर खुसरो*
माध्यम एवं साधन	–	*हाथ से बने कागज पर जल रंग*
रचनाकाल	–	*लगभग 18वीं शताब्दी*
शैली	–	*हैदराबादी शैली*
आकार	–	*29 से. मी. लम्बा तथा 22 से. मी. चौड़ा*
चित्रकार	–	*नाम का अभी तक पता नहीं चल सका है (क्योंकि चित्रकार ने चित्र पर अपना नाम नहीं लिखा है।)*
संग्रह	–	*राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली*

सामान्य परिचय

इस लघु चित्र में हजरत निजामुद्दीन औलिया अपने शिष्य अमीर खुसरो से सितार पर सूफी संगीत का आनन्द ले रहे हैं। गुरूजी सफेद दाढ़ी, लम्बे चोगे, सर पर सूफी टोपी तथा अपने आभा मन्डल सहित वृक्ष के नीचे विराजमान हैं। शिष्य अमीर खुसरो काली दाढ़ी, पगड़ी, सूफी चोगे में सितार सहित अपने गुरू जी के सामने संगीत की मुद्रा में बैठकर उन्हें संगीत सुना रहे हैं। चित्र में प्राकृतिक चित्रण भी अपने सुन्दर रूप में है।

पाठगत प्रश्न (10.2)

सही उत्तर छाँट कर लिखें।

(क) दकन शैली के एक चित्र में प्रसिद्ध जोड़ी गुरू–शिष्य को दिखाया गया है जिनका नाम है –

(i) गुरू नानक और मर्दाना

(ii) निजामुद्दीन और अमीर खुसरो

(iii) रविदास और कबीर

(ख) इस चित्र शैली का नाम है

(i) तंजौर शैली

(ii) हैदराबादी शैली

(iii) बीजापुर शैली

(ग) इस चित्र का रचनाकाल है

(i) 8वीं शताब्दी

(ii) 19वीं शताब्दी

(iii) 18वीं शताब्दी

तंजौर चित्रकला

10.3 तंजौर चित्रकला

शीर्षक	–	*देवी सरस्वती*
माध्यम	–	*जल रंग तथा रंगीन चमकदार पत्थर*
रचनाकाल	–	*19वीं शताब्दी*
शैली	–	*तंजौर शैली*
चित्रकार	–	*चित्र गरा कृष्ण अप्पा*
संग्रह	–	*राष्ट्रीय आधुनिक कला बीथि, नई दिल्ली*

सामान्य परिचय

भारतीय चित्रकला शैली में तंजौर शैली एक अनोखा स्थान रखती है, क्योंकि एक ओर तो यह नक्काशी की हुई तथा चित्रित काष्ट से मिलती है, दूसरी ओर इसमें रत्न, सोना, चाँदी, रंगीन पत्थर आदि का प्रयोग है।

16वीं शताब्दी में तमिलनाडु के तंजौर में इस शैली का उद्‌गम हुआ परन्तु दक्षिण में तथा उत्तर में भी इस प्रकार के चित्र मिलते हैं। विषय–वस्तु मुख्य रूप में पौराणिक है। राम, कृष्ण, गणेश आदि देवताओं के चित्र अधिक संख्या में उपलब्ध हैं। अधिकतर तन्जौर चित्र 19वीं शताब्दी में बने।

इस चित्र में देवी सरस्वती को वीणा बजाते हुये दर्शाया गया है। देवी के चार हाथ हैं तथा वह सिंहासन पर बैठी हैं। चित्र का अलंकरण सुन्दर ढंग से किया गया है। अलंकरण का मूलभाव भारतीय शास्त्रीय कला पर आधारित है और बड़ी सूक्ष्मता से स्पष्ट किया गया है।

पाठगत प्रश्न (10.3)

सही उत्तर छाँट कर लिखें–

(क) तंजौर शैली के चित्र

(i) रत्न–जड़ित होने,

(ii) रेखाओं और रंगों तथा

(iii) विषय–वस्तु के कारण अपने आप में विशिष्ट हैं।

(ख) इस शैली का उद्‌गम हुआ –

(i) तमिलनाडु में

(ii) विजय नगर में

(iii) गुजरात में।

(ग) दिये गये सरस्वती के चित्र के अलंकरण के मूलभाव में

(i) फारसी

(ii) पश्चिम

(iii) भारतीय शास्त्रीय कला का प्रभाव है।

10.4 सारांश

मध्य कालीन भारत में, सरकार की कमजोरी के कारण दक्षिण भारत के अनेक प्रान्तों ने अपने आप को स्वतंत्र राज्य घोषित कर दिया जिनमें विजय नगर तथा बेहमनी राज्य प्रमुख थे। उस उथल पुथल के कठिन दौर में दक्षिण भारत के स्थानीय कलाकारों तथा उत्तर भारत से दक्षिण में बस गए कलाकारों ने वहां के नए राजाओं, नवाबों तथा सामन्तों का आश्रय पाकर चित्रकला व भवन निर्माण कला में बहुत अच्छी रचनाएं की।

विजय नगर के राजाओं के सहयोग के कारण ही विजय नगर राज्य में द्रेविड शैली तथा इन्डोसरसैनिक शैली विकसित हुई। दक्षिण के चोल वंश के राजाओं ने तन्जौर नगर में अपने मन्दिरों तथा मूर्तियों का निर्माण कराया, साथ ही चित्रकारी के क्षेत्र में भी बड़े बड़े काम कलाकारों ने सम्पन्न किए। इस क्षेत्र की सारी कलाकृतियां हिन्दू देवी देवताओं तथा पौराणिक कथाओं से परिपूर्ण हैं।

10.5 पाठगत प्रश्न के उत्तर

10.2 (क) निजामुद्दीन तथा अमीर खुसरो

(ख) हैदराबादी शैली

(ग) 18वीं ईसवी

10.3 (क) रत्न द्वारा अलंकृत

(ख) तमिलनाडु में

(ग) भारतीय शास्त्रीय का प्रभाव है।

10.6 माडल प्रश्न

(1) मध्यकाल में दक्षिण में कला का विकास कैसे हुआ?

(2) दिये गये हैदराबादी शैली के चित्र का वर्णन कीजिए।

(3) तंजौर शैली की चित्रकला दूसरी शैली से भिन्न क्यों है, बताइए।